PROSPECTUS

विवरणिका

सत्र 2024–25

:: अनुक्रमणिका ::

क्र.स.	विवरण
1.	पृष्ठभूमि
2.	संस्था का परिचय
3.	महाविद्यालय का परिचय
4.	महाविद्यालय की स्थापना
5.	संस्था का उद्देश्य
6.	महाविद्यालय का उद्देश्य
7.	महाविद्यालय में संचालित गतिविधियां भाग – 1 सैद्धान्तिक कार्य भाग – 2 प्रायोगिक कार्य
8.	आन्तरिक मूल्यांकन योजना
9.	बाह्य मूल्यांकन
10.	महाविद्यालय की उपलब्धियां
11.	अर्न्तमहाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता
12.	महाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता
13.	उन्मुक्त गगन शिविर (वनशाला शिविर)
14.	प्रवेश एवं महाविद्यालय नियमन
15.	पुस्तकालय नियम
16.	बुक बैंक
17.	आवश्यक निर्देश
18.	छात्रवृत्ति
19.	सरस्वती वंदना, गुरू वंदना, शांति पाठ, प्रार्थनाएं, राष्ट्रीय गान, प्रवेश आवेदन पत्र प्रारूप
20.	संकल्प

विपुल कौशिक
संस्थापक
अंकुर बी.एड. कॉलेज
नाथद्वारा, राजसमंद (राज.)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि द अंकुर बी. एड महाविद्यालय नाथद्वारा द्वारा सत्र 2024–25 की विवरणिका (प्रोस्पेक्टस) का प्रकाशन किया जा रहा है।

विवरणिका किसी भी महाविद्यालय या संस्थान की प्रवृत्तियों एव कार्यों के रेखांकन के साथ भविष्य की एक झलक को भी प्रस्तुत करती है।

यह महाविद्यालय निरन्तर प्रगति कर रहा है और इसका श्रेय इसके कर्मठ, निष्ठावान, सेवाभावी प्राध्यापकों व कार्यकर्ताओं को दिया जा सकता है। उनके ये प्रयास निरन्तर रहेंगे, ऐसी आशा है।

मैं द अंकुर बी. एड. महाविद्यालय के समर्पित कार्यकर्ताओं तथा प्राध्यापकों एवं अधिकारियों को बधाई एवं अपनी शुभकामनाएं देता हूं और अपेक्षा करता हूं कि वे इसे आदर्श, स्तरीय और श्रेष्ठ शिक्षक बनाएं। यहां प्रवेश लेने वाले छात्रों का भविष्य बेहतर होगा ऐसा विश्वास है। आशा है यह विवरणिका छात्रोपयोगी सिद्ध होगी।

विवरणिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ है।

विपुल कौशिक
संस्थापक
अंकुर बी.एड. कॉलेज
नाथद्वारा, राजसमंद (राज.)

—: दिशा बोध :—

.....
चेयरमेन, फेकल्टी ऑफ एज्युकेशन
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि द अंकुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा 2024–25 की विवरणिका (प्रोस्पेक्टस) का प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरी यह मान्यता है कि व्यक्ति को समाज का आदर्श और श्रेष्ठ संस्कारित नागरिक बनाने में शिक्षा को प्रमुख भूमिका रहती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति के मानसिक विकास से नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज विकास से जुड़ा है। राष्ट्र के विकास का आधार केवल व्यक्ति ही है। यूनानी दार्शनिक अरस्तु के अनुसार व्यक्ति से समाज बनता है और समाज में रहकर ही व्यक्ति का विकास संभव है। दोनों एक–दूसरे के पूरक है। अच्छे समाज की कल्पना राष्ट्र की आवश्यकता ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि उसके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुल्यों के आधार पर ही की जा सकती है। शिक्षा इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम है। इस संदर्भ में महाविद्यालयों की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है और इस कार्य के लिए द अंकुर महाविद्यालय हमेशा अग्रणी रहा हैं।

वर्तमान में मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम प्रयोग, परीक्षण और परिणाम की सतत् श्रृंखला प्रगति के पथ को प्रसस्त कर रहा है। जीवन निरन्तर इसी विधा से जिया जाने लगा है। इससे व्यक्ति को आत्मविश्वास और अपना अस्तित्व बनाये रखने का रखने का एक वैज्ञानिक एवं विश्वस्त आधार प्राप्त होता है। प्रत्येक कार्य का प्रारम्भ, उसका सम्पादन और उस अवधि में होने वाले विविध अनुभव भविष्य को सुखद बनाने की शक्ति देते हैं।

शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में आज जितने नये सुधार व नवाचार देखने को मिलता हैं, वे कभी–कभी अटपटे व असमंजस पैदा करने वाले हैं, किन्तु कसौटी पर परखने पर जिनके परिणाम उपयोगी और सुखद होते हैं। प्रायः शिक्षाविद् उन्हें अपने तरीके से स्वीकारते और समीक्षा करते हैं। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया न्यूनाधिक शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में में क्रान्ति की ओर अग्रसर होने का संकेत देती है। प्रतिभाओं को परखने, उन्हें प्रोत्साहन देने और उज्जवल भविष्य के लिए देश के नागरिक निर्माण में भी इससे पर्याप्त बल मिलता है।

आज नई पीढ़ी जो आधुनिक इलेक्ट्रोनिक मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स की दुनिया से गुजर रही है, इन्हें उम्र से पहले ही अपने कद से अधिक ऊँचा दिखने का अहसास होन लगा है। ऐसी अवस्था में हमें शिक्षण परीक्षण में अधिक सावधानी की आवश्यकता होगी। हमें सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे छात्र विविध स्त्रोतों से संचित उन सूचनाओं का उपयोग सही संदर्भों में करें और सही अर्थों में समझें भी। कक्षाओं के लिये निर्धारित किये जाने वाले पाठ्यक्रम में ऐसी विषयवस्तु और विधाओं को शामिल किया जाए जो जीवनापयोगी हो और मौलिक आदर्शों के अनुकुल भी, जिससे सांस्कृतिक धरोहर भी सुरक्षित रह सके और परिष्कृत समझे जाते हैं दिगभ्रमित होने का भय कदाचित कम हो जाए और कक्षा अध्ययन–अध्यापन अधिक सहज एवं सार्थ हो जाये।

विश्व की विभिन्न गतिविधियों में इन्टरनेट ने जो क्रान्ति उत्पन्न की है, शिक्षा के क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका उभर कर आयी है। इसकी त्वरित गति, तत्काल निर्णय तथा विश्वसनीय परिणाम सभी अभूतपूर्व है। कक्षा–शिक्षण से लेकर प्रयोगशाला में किये जाने वाले प्रयोग का परिणाम एक ही स्थान पर बैठकर प्राप्त किये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर मुल्यांकन की योजनाएं भी प्रस्तावित हैं। यद्यपि इसके प्रतिफलों की समीक्षा अभी शिक्षणशास्त्रियों एवं महाविद्यालय प्रयासों एवं संगम सदस्यों को करनी होगी की यह सब कुछ हमारी व्यवस्था में कितना सटीक और अनुकुल रहेगा।

चुंकि आज के इस समय में कई चुनौतियां उभर कर आती हैं। इसके बावजूद भी सभी स्ववित्तपोषी महाविद्यालयों द्वारा समय–समय पर MHRD, UGC, NCTE, STATE, GOVT. आदि की पालना की जाती है जिससे शिक्षण–शिक्षण में नया आयाम जुड़ता है। मेरे स्वयं का व्यक्तिगत यह प्रयास रहता है कि हमारा पाठ्यक्रम सैद्धांतिक न होकर के जीवन के लिए प्रायोगिक होना चाहिए। हमारे विश्वविद्यालय का अध्यापक आदर्श रूप में नजर आना चाहिए। किसी भी महाविद्यालय या संस्थान की विवरणिका उसकी प्रवृत्तियां एवं कार्यों के रेखांकन के साथ भविष्य की एक झलक को भी प्रस्तुत करती है। द अंकुर शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, नाथद्वारा वर्ष 2008 से शिक्षक शिक्षा के उत्थान के लिए कटिबद्ध है। महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अलग से पहचान बनाये हुए है।

मैं द अंकुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, नाथद्वारा के प्रबंधन समर्पित कार्यकर्ताओं, प्राध्यापकों एवं अधिाकारियों को बधाई एवं अपनी शुभकामनाएं देती हूं और अपेक्षा करती हूं कि वे इसे आदर्श, स्तरीय और श्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बनाए। यहाँ प्रवेश लेने वाले प्रशिक्षणर्थियों का भविष्य बेहतर होगा, ऐसा विश्वास है। आशा है यह विवरणिका छात्रोपयोगी सिद्ध होगी।

विवरणिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं है।

.....

–: निदेशक वचन :–

द अंकुर बी. एड. महाविद्यालय की प्रशिक्षणार्थियों व उनके अभिभावकों को नए सत्र 2024–25 को विवरणिका उनके हाथों में सौपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हैं। हम शिक्षा की बात करें तो इसके पूर्व जनक हाथों में सौपते हुए मुझे हार्दिक स्मरण हो आता है। राजा जनक के मन में सत्य को पहचानने की इच्छा जागृत हुई। प्रश्न था– सत्य क्या है? जागृत अवस्था में जो देखा–सुना जाता है, अनुभव किया जाता है– वह सत्य है या जो सत्य में दिखाई देता है? मन मे द्वन्द्व था। सभासद कोई उचित उत्तर नहीं दे सके। अन्त में उस वक्त के महान 'अष्टावक्र' को आमंत्रित किया गया। मुनि अष्टावक्र आए, कुरूप बैडोल शरीर वाले अष्टावक्र को देखकर सभासद हंस पड़े। मुनि अष्टावक्र समझ गए कि सभासदों का क्या दृष्टिकोण था?

बोले – "राजन मैंने सोचा था कि आपने मुझे विद् सभा में ज्ञान चर्चा के लिए बुलाया था। पर मैं तो देखता हूं कि आपने मुझे ऐसे लोगों के बीच बुलाया है, जिनकी नजर सिर्फ मेरे शरीर पर ही टिकी है।"

अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा से ज्ञानाजर्न होता है और ज्ञानाजर्न से आत्मिक बल प्राप्त होता है। यदि हमारे पास आत्मिक बल है, हमारी बुद्धि विकसित और परिष्कृत है तो अन्तःकरण से निकला हुआ शुद्ध भाव बाह्य कुरूपता को पराजित कर देता है और ज्ञान की गंगा में गोता लगाते–लगाते तो बाह्य आवरण ही हट जाता है। अन्तःकरण निश्चल हो जाता है– वहाँ बहती है तो मात्र ज्ञान की पवित्र गंगा। तब तक काँटों के पौधों में सुमन नहीं खिलते तब तक हम उस पौधें का तिरस्कार करते है। किन्तु यदि उसमें एक भी पुष्प खिल जाता है तो हमारी विचारधारा बदल जाती है– हमें पौधें से स्नेह हो जाता है।

फिर, गुरू तो ज्ञान से भी बड़ा है। ज्ञानप की सूचना का पर्याय है। एक और जहां गुरू का स्त्रोत है, वहीं दूसरी और एक विवके जगानें का प्रेरक व मार्गदर्शक सूत्र भी है। अभी शिक्षार्थी श्रद्धा और विश्वास के मार्ग पर चलकर ज्ञान खोजता है। वहीं ज्ञान सच्चा होता है जो सोचा–समझा और परिश्रम से प्राप्त किया हुआ होता है। गुरू को गोविन्द से वरीयता भारतीय संस्कृति में शायद इसीलिए दी गई है।

शिक्षा द्वारा शिक्षक को शिक्षार्थी में विवके जाग्रत करना होगा। 'नीर क्षीर विवके' के माध्सम से दूध का दूध और पानी का पानी कर देने वाली दृष्टि उत्पन्न करनी होगी। इसी दृष्टि से सत्य तक पहुँचने का चेस्टा सफल हो पायेगी। शिक्षकों को विद्यार्थी में भले बुरे मे विभेद का विवके उत्पन्न करना होगा और सही विवके उन्हें सत्य तक ले जाने में सहायता करेगा। सत्य के प्रति अनेक आग्रह को दृष्ट करेगा। उन्हें उत्तम चरित्र का आधार प्रदान करेगा।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी की कि 'द अंकुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, नाथद्वारा' दसवें सत्र की और अग्रसर है। विगत वर्षों में महाविद्यालय ने शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद व अन्य प्रवृत्तियों में भी विजेता के रूप में कीर्तिमान स्थापित कर राजसमन्द में अपनी अलग ही पहचान बनाई है। साथ ही सामुदायिक, समाज सेवा कार्यक्रमों पॉलिथीन निवारण, वृक्षारोपण, कल्याण, विकलांग, बी.पी.एल. परिवार, गरीब प्रशिक्षणार्थियों को आर्थिक सहायता, पूर्व विद्यार्थी कल्याण परिषद् की स्थापना एवं समय–समय पर उन्हें सहयोग हेतु प्लेसमेंट सेल स्थापित किया गया। महिला प्रकोष्ठ स्थापित कर महिला उत्पीड़न, विधवा, परित्यगता की सहायता आदि कार्य कर राजसमन्द जिले में अपनी पहचान बनाई है।

संस्थान देश, समाज तथा शिक्षा विभाग के लिए उत्कृष्ट शिक्षकों के निर्माण के लिए कटिबद्ध है और हमेशा रहेगा।

शिक्षाविदों, प्रबुद्धजनों, प्रशासकों, प्रचार्य, समस्त प्राध्यापकों एवं मंत्रालयिक स्टाफ तथा छात्राध्यापकों द्वारा संस्थान को पूर्व की तरह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जो योगदान मिला और भविष्य में इसी तरह मिलता रहेगा। संस्थान इन सभी के प्रति कृतज्ञ आभार व्यक्त करता है।

विवरणिका प्रकाशन समिति के कठिन परिश्रम के समय पर विवरणिका सुरूचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित की गई, इसके लिए समिति के संयोजक डॉ. प्रदीप पानेरी एवं सदस्यगण श्रीमती किरण कौशिक, श्री किशोर व्यास, श्री उमेश रावल, श्री तुलसीराम व्यास, श्री कुंदन बंसल, श्री शैलेष गुर्जर, श्रीमती विजय लक्ष्मी त्रिपाठी, श्रीमती लीना पालीवाल, श्रीमती सुनिता श्रीमाली, श्रीमती चेतना सांचिहर, सुश्री शकुन्तला पालीवाल, श्रीमती अनिता भाटी, श्रीमती मधु शर्मा, श्रीमती प्रमिला श्रीमाली, श्री विष्णु पुरोहित, श्री लोकेश कुम्हार एवं श्री कपिल पुरोहित बधाई एवं साधुवाद के पात्र है।

महिता कौशिक
निदेशक

–: प्राचार्य की कलम से :–

मुझे यह अवगत कराते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारा महाविद्यालय केवल प्रशिक्षण की औपचारिकताएं पूरी नहीं करता, बल्कि प्रशिक्षण के दौरान शिक्षा में नवाचार के लिए अत्याधुनिक शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग कैसे करें? शिक्षा को सुरूचिकर, सुग्राही एवं प्रभावी कैसे बनायें जिससे विद्यार्थी–अध्यापक का सम्बन्ध मधुर बनें। अध्यापक द्वारा दिया हुआ ज्ञान विद्यार्थी के मानस पटल पर स्थायी रह सकें।

हमारा ध्येय शिक्षा विभाग, समुदाय और विद्यार्थियों के लिए अच्छे सुसंस्कारित शिक्षक तैयार करना जो, चरित्रवान, संस्कारवान, कर्तव्यनिष्ठ, समय–पाबन्दी, अनुशासनप्रिय, देशप्रमी एवं राष्ट्रहित को ध्यान में रखे वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रखें और शिक्षा विभाग, समाज एवं विद्यालयों में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर उत्कृष्ट शिक्षक बनें।

प्रशिक्षण के दौरान सैद्धान्तिक के साथ–साथ व्यावहारिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है ताकि प्रशिक्षण के पश्चात क्षेत्र में किसी भी प्रकार की कठिनाई अनुभव न करें अर्थात् भावी शिक्षकों में भारतीय परिवेश के अनुरूप शिक्षा के यर्थाथ स्वरूप के प्रति समझ विकसित करना हमारा ध्येय रहा है, ताकि भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित बनाया जा सकें।

मैं भावी प्रशिक्षणार्थियों का महाविद्यालय में स्वागत करता हूँ। आपके व्यक्तित्व को संवारने का अवसर दें और अपने शिक्षक व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सार्थक बनायें।

डॉ. प्रदीप कुमार पानेरी
प्राचार्य

(1) पृष्ठभूमिः–

श्रीनाथ जी का प्राकट्य–

भगवान श्री कृष्ण ने देवराज इन्द्र के अहंकार को नष्ट करने के लिए सभी ब्रजवासियों को गिरिराज गोवर्द्धन की पूजा करने हेतु कहा। तब सभी ब्रजवासियों ने गिरिराज को नाना प्रकार के भोग धराएं। वेदव्यास जी के अनुसार तब सभी ब्रजवासियों को गिरिराज स्वरूप धारण करके सुरक्षा का आश्वासन दिये व अर्न्तध्यान हो गये। वे पुनः श्रावण तृतीया को विकमाब्द 1466 को पुनः प्रकट हुए।

श्रावण सुदी पंचमी को इन्हीं प्रभु मुखारबिन्द का प्राकट्य हुआ। संयोगवश इसी दिन वल्लभाचार्य का जन्म हुआ था।

फाल्गुन शुक्ला 11 (एकादशी) को सम्पूर्ण विग्रह प्राकट्य हुआ।

श्रीनाथ जी का नाथद्वारा आगमन–

प्रभु के प्राकट्य के समय भारत में मुगलों का शासन था। मुगल बादशाह अकबर के समय कई कृष्ण भक्त हुए। धीरे–धीरे विरोध बढ़ता गया। औरंगजेब ने हिन्दु धर्मानुयायियों को धर्म परिवर्तन करवाना व पूज्य विग्रहों को खण्डित करना प्रारम्भ कर दिया। सुरक्षा की दृष्टि से दामोदरजी ने श्रीनाथ जी की आज्ञा से ब्रज छोड़ना उचित समझा। उन्होंने मात्र प्रभु की शरण ली व धन इत्यादि छोड़कर वि.स. 1726 अश्विन शुक्ल (15) पूर्णिमा को रात्रि के प्रहर में रथ में ब्रज से प्रस्थान किया।

संवत् 1728 कार्तिक माह में प्रभु श्रीनाथ जी नाथद्वारा पहुँचे। समय मेवाड़ में राजा राजसिंह का शासन था। वे तात्कालिक हिन्दू सम्राटों में सर्वाधिक शक्तिशाली थे, अतः प्रभु सभी गोस्वामियों को सुरक्षा का वचन दिया उन्होनें प्रभु को सिंहाड़ में ही विराजने की प्रार्थना की। प्रभु श्रीनाथ जी के नाम से ही सिंहाड़ का नाम नाथद्वारा हो गया।

नाथद्वारा धर्मिक आध्यात्मिक नगरी के साथ–साथ शिक्षा की नगरी के रूप में भी उभर रहा है यह उदयपुर शहर से 55 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शैक्षणिक क्षैत्र में सुधारात्मक परिवर्तन के लिए सत्र 1984 में द अंकुर एज्यूकेशनल सोसायटी की स्थापना की गई। समाज में व्याप्त असमानताओं तथा शिक्षा से वंचित समूह को शिक्षा से जोड़कर उन्हें सदाचार एवं उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने हेतु 'द अंकुर' के नाम से संस्था की स्थापना की गई। वर्तमान में संस्था के उद्देश्य के अनुरूप कार्य करते रहने से प्रशासन द्वारा समय–समय पर इसे पुरूस्कृत एवं सम्मानित किया जाता है।

(2) संस्था का परिचयः–

द अंकुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय को द अंकुर एज्यूकेशनल सोसायटी संस्थापिका श्री वेणु कौशिक, संस्था सचिव श्री हरिश कौशिक एवं निदेशक श्री विपुल कौशिक द्वारा "हमारे बालक अच्छे बने तो उन्हें बनाने वाले कैसे बने" उक्त व्यक्ति को चरितार्थ करते हुए एवं समाज में समर्पित शिक्षकों की आवश्यकता को देखते हुए समाज स्वीकार्य योग्य, कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासन प्रिय, चरित्रवान एवं संस्कारमय शिक्षक के निर्माण को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय की स्थापना की गई।

(3) महाविद्यालय की स्थापनाः–

बी.एड. द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम

द अंकुर बी. एड. कॉलेज, नाथद्वारा का राज्य सरकार द्वारा अनापति प्रमाण–पत्र रा. स. शिक्षा (ग्रुप–1) विभाग क्र.प. 10 शिक्षा. 1/2009 जयपुर दिनांक 29/6/2009 को जारी किया गया।

द अंकुर बी.एड. कॉलेज राज. को शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिये एन.सी.टी.ई से मान्यता प्राप्त एफ.एन.आर. सी/एन.सी.टी.ई./आर.जे.–1138/2008/58416 दिनांक 23/9/2008 को बी. एड. 100 सीटें सहशिक्षा हेतु अनुमोदित की गई। (कला–70, विज्ञान–20, वाणिज्य–10)

कला– हिन्दी, अंग्रजी, संस्कृत, भूगोल, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिक शास्त्र, गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, संगीत, चित्रकला।

वाणिज्य– बहीखाता, व्यापार पद्धति।

विज्ञान– जीव विज्ञान, गृह विज्ञान, रसायन शास्त्र, सामान्य विज्ञान, भौतिक शास्त्र, गणित।

बी.ए.बी.एड. 4 वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम

द अंकुर बी. एड. कॉलेज, नाथद्वारा का राज्य सरकार द्वारा अनापति प्रमाण–पत्र रा. स. शिक्षा विभाग जयपुर द्वारा जारी किया गया।

द अंकुर बी.एड. कॉलेज राज. को शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिये एन.सी.टी.ई से मान्यता प्राप्त एन.आर.सी/एन.सी.टी.ई./एन.आर.सी.ए.पी.पी.–2016–16189/2019/203482 दिनांक 27/5/2019 को बी.ए.बी.एड. 100 सीटें (50+50) एकीकृत पाठ्यक्रम हेतु अनुमोदित की गई। (कला–100)

कला– हिन्दी, अंग्रजी, संस्कृत, भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, चित्रकला।

(4) संस्था के उद्देश्यः–

1. शिक्षा सम्बन्धी।
2. वानिकी एवं पर्यावरण सम्बन्धी।
3. सामाजिक सम्बन्धी।
4. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धी।
5. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी।
6. अन्य।

(5) महाविद्यालय के उद्देश्यः–

1. शिक्षा के नवीनतम सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

2. महाविद्यालय की गरिमा के अनुरूप नवीन प्रयोग एवं नवाचार के अनुसार शिक्षकों को प्रशिक्षित करना ऐसे अध्यापकों को प्रशिक्षित करना, जो देश की विरासत एवं सांस्कृतिक धरोहर के प्रति प्रेम रखें, उसे सदैव सुरक्षित रखें देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रख उसके अनुरूप कार्य करें।

3. भारतीय शिक्षा के राष्ट्रीय आदर्शों को प्राप्त करने में शिक्षकों की सहायता करना।

4. भारतीय शिक्षा एवं सांस्कृतिक पर साहित्य तैयार करना एवं उसके प्रकाशित करना।

5. अध्यापकों में नैतिक गुण, मानवाधिकार, मानवीय मूल्यों को पोषित करना ताकि आदर्श नागरिक बनाये जा सकें।

6. प्रजातांत्रिक एवं जनतंत्रीय प्रणाली से प्रगतिशील जीवनयापन के लिये राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता स्थापित की जा सकें।

7. भावी शिक्षकों में भारतीय परिवेश के अनुरूप शिक्षा के याथार्थ स्वरूप के प्रति समझ विकसित कर उनमें अध्यापक की वास्तविक भूमिका को ह्रदयंगम कर निर्वाह कर सकें।

8. भावी अध्यापकों में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को प्रतिस्थपित करना, ताकि वे भविष्य में भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित बना सकें।

(6) महाविद्यालय में संचालित गतिविधियां:–

1. अनुस्थापना कार्यक्रम–
   प्रशिक्षणार्थीयों का परिचय एवं द्वि–सत्रीय कार्यक्रमों/गतिविधियों की जानकारी प्रदान करना।

प्रथम वर्ष

भाग–1 :– सैद्धान्तिक ज्ञान– इसके अन्तर्गत चार अनिवार्य प्रश्न–पत्र होंगे, जो इस प्रकार है।

प्रश्नपत्र– 1 बाल्यावस्था एवं वृद्धि–विकास।
प्रश्नपत्र–2 समकालीन भारत एवं शिक्षा।
प्रश्नपत्र–3 पाठ्यक्रम के परे भाषा एवं पाठ्यवस्तु पर विमर्श।
प्रश्नपत्र–4 कक्षा–कक्ष प्रबन्ध एवं शैक्षिक तकनीकी।

भाग–2 :– ऐच्छिक विषय–

प्रश्नपत्र– 5 एवं 6

कला विषय– हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, संगीत, अर्थशास्त्र, सामाजिक अध्ययन, समाजशास्त्र, चित्रकला, गृह विज्ञान।

–विज्ञान– जीवन विज्ञान, गृह विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, सामान्य विज्ञान, गणित।

(नोट– वर्गानुसार चयनित दो शिक्षण विषयों में से प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिये वार्षिक परीक्षा 80 अंक एवं सत्रीय कार्य के लिए 20 अंक निधारित होंगे। इस प्रकार प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंकों का होगा।)

–प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किन्हीं दो विषयों का अभ्यास शिक्षण हेतू चयन किया जाएगा।

प्रश्नपत्र 7– (कला एवं नाटक) व प्रश्नपत्र–8 (Critical Understanding of ICT) का महाविद्यालय द्वारा आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर अंक प्रदान किये जाएंगें। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 50 अंक का होगा।

द्वितीय वर्ष

भाग 1– इसके अन्तर्गत तीन अनिवार्य प्रश्न–पत्र होंगे जो इस प्रकार है–

प्रश्नपत्र 1– ज्ञान एवं पाठ्यक्रम (Knowledge and Curriculum)
प्रश्नपत्र 2– अधिगम एवं मूल्यांकन (Assets of Learning)
प्रश्नपत्र 3– शैक्षिक प्रबंधन एवं समावेशी विद्यालय का सृजन।

(नोट– प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए वार्षिक परीक्षा 80 अंक व 20 अंक सत्रीय कार्य के होंगे। इस प्रकार प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा।)

भाग 2– ऐच्छिक विषय–

प्रश्नपत्र 4 व 5–
–उपर्युक्त विषय प्रश्न वर्ष के शिक्षण के विषय ही होंगे।

–प्रत्येक प्रश्न–पत्र के लिए वार्षिक परीक्षा 40 अंक व सत्रीय कार्य के लिए 10 अंक निर्धारित होंगे। इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न–पत्र 50 अंक का होगा।

भाग 3– ऐच्छिक पाठ्यक्रम (प्रश्नपत्र–6)

–प्रश्नपत्र–6 Understanding the Self सभी परिक्षणार्थीयों के लिए अनिवार्य होगा। इसके 50 अंक आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर दिए जाएंगे।

भाग 4– ऐच्छिक पाठ्यक्रम (प्रश्नपत्र 7)

– इसके अंतर्गत निम्न पाठ्यक्रमों में से कोई एक विषय चयन करें–

1- Vocational Work Education.
2- Health and Physical Education.
3- Guidance & Counselling.
4- Innovation & Action Research.
5- Peace Education.

–यह प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा। ये अंक आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जाएंगे।

बी.ए.बी.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

भाग – 1

सैद्धान्तिक – इसके अंतर्गत पांच अनिवार्य प्रश्न–पत्र होगें, जो इस प्रकार हैं :–

प्रश्न पत्र–1 बाल्यावस्था एवं वृद्धि विकास
प्रश्न पत्र–2 समकालीन भारत एवं शिक्षा
प्रश्न पत्र–3 अनिवार्य अंग्रेजी (50 अंक)
प्रश्न पत्र–4 स्वयं की समझ (50 अंक)
प्रश्न पत्र–5 पर्यावरण अध्ययन (50 अंक)

भाग – 2

ऐच्छिक विषय – सभी प्रशिक्षणार्थियों को तीन वैकल्पिक विषय का चयन करना होता हैं। यहां विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित समूह दिए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक समूह से केवल एक विषय का चयन करना हैं।

प्रथम समूह – अर्थशास्त्र/संस्कृत
द्वितीय समूह – भूगोल/राजस्थानी
तृतीय समूह – राजनीति विज्ञान/चित्रकला
चतुर्थ समूह – मनोविज्ञान/इतिहास
पंचम समूह – लोक प्रशासन/हिन्दी/गृह विज्ञान
षष्ठ समूह – समाजशास्त्र/अंग्रेजी साहित्य

द्वितीय वर्ष

भाग – 1 (अनिवार्य विषय प्रश्न–पत्र)

प्रश्न पत्र – 1 अधिगम एवं शिक्षण
प्रश्न पत्र – 2 ICT

भाग – 2

A. (ऐच्छिक विषय)
   नोट – ऐच्छिक विषय प्रथम वर्ष के अनुसार ही रहेगें।
B. शिक्षण शास्त्र प्रश्न पत्र – बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष में प्रशिक्षणार्थी को दो शिक्षण–शास्त्र विषयों का चयन करना होता हैं, जो कि उनके ऐच्छिक विषयों में से ही कोई दो होगें।

तृतीय वर्ष

भाग – 1 (अनिवार्य प्रश्न–पत्र)

प्रश्न पत्र – 1 अधिगम के लिए आंकलन
प्रश्न पत्र – 2 अनिवार्य हिन्दी

भाग – 2 (ऐच्छिक विषय)

नोट – ऐच्छिक विषय प्रथम वर्ष के अनुसार ही रहेगें।

चतुर्थ वर्ष

भाग – 1 (अनिवार्य प्रश्न–पत्र)

प्रश्न पत्र – 1 ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – 2 शैक्षिक प्रबंधन एवं समावेशी शिक्षा

प्रश्न पत्र – 3 कला एवं नाटक (50– आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर अंक प्रदान किए जाते हैं।)

भाग – 2 (ऐच्छिक विषय)

प्रश्न पत्र – इसके अंतर्गत निम्न पाठ्यक्रमों में से कोई एक विषय चयन करना हैं –

1. Vocational/ Work Education
2. Health and Physical Education
3. Guidance And Counselling
4. Innovation and Action Research
5. Peace Education

यह प्रश्न पत्र 50 अंक का होगा।

आंतरिक मूल्यांकन–

क्र.स.	प्रवृति	विशेष विवरण
1.	सूक्ष्म शिक्षण	बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में सूक्ष्म शिक्षण में पांच कौशलों का अध्यापन करवाना, जिसके अन्तर्गत प्रस्तावना, प्रश्न प्रवाह, श्यामपट्ट उद्दीपन व व्याख्या कौशल, प्राध्यापकों द्वारा प्रत्येक कौशल प्रस्तुती देना तथा प्रशिक्षु से सूक्ष्म शिक्षण पाठों का अभ्यास दिलवाना।
2.	समरूपित शिक्षण	बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में प्रत्येक छात्राध्यापकों को अपने दोनों शिक्षण विषयों में 10+10 (20) पाठ योजनाओं का प्रस्तुतीकरण दिलवाना।
3.	समालोचना पाठ	बी.ए.बी.एड. तृतीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष के ऐच्छिक विषयों पर एक–एक समालोचना पाठ दिलवाना।
4.	अवलोकन	बी.ए.बी.एड. तृतीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में दोनों ऐच्छिक विषयों की दैनिक अभ्यास पाठ डायरी में 10–10 पाठों का अवलोकन करना।
5.	विद्यालय अवलोकन	बी.ए.बी.एड. प्रथम वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में किसी एक राजकीय विद्यालय का अवलोकन कर डायरी जमा करवाना।
6.	सहायक सामग्री निर्माण	बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में अभ्यास पाठ एवं समरूपित शिक्षण से सम्बन्धित शिक्षण सहायक सामग्री (चार्ट, मॉडल एवं प्रयोग) का निर्माण करवाना।
7.	मनोवैज्ञानिक प्रायोगिक कार्य एवं क्रियात्मक अनुसंधान	बी.ए.बी.एड, चतुर्थ वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में दो मनोवैज्ञानिक परीक्षण करना तथा क्रियात्मक अनुसंधान प्रायोजना बनाना एवं पूर्ण कर प्रतिवेदन निर्माण करना।
8.	शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद	सभी वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों का व्यायाम, योगा, एथेलेटिक्स एवं विभिन्न प्रकार के खेलों में अनिवार्य रूप से भाग लेना।
9.	पुस्तक समीक्षा	बी.ए.बी.एड. चतुर्थ वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में दोनों विषय में से किसी एक विषय की पुस्तक समीक्षा कर प्रतिवेदन तैयार करना।
10.	दृश्य–श्रृव्य उपकरणों का उपयोग	बी.ए.बी.एड. द्वितीय, तृतीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में अभ्यास एवं समालोचना पाठ से सम्बन्धित दृश्य–श्रृव्य उपकरणों का निर्माण करना एवं महाविद्यालय में उपलब्ध उपकरणों का उपयोग करना।
11.	उनमुक्त गगन शिविर	बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष एव बी.एड. प्रथम वर्ष के अंतर्गत सात दिवसीय उनमुक्त गगन शिविर का प्रतिवेदन तैयार करना, जिसमें श्रमदान, सफाई रैली, सर्वे, साक्षरता, समाज सेवा, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां, खेलकूद, कैम्प फायर आदि।
12.	सामुदायिक सहभागिता एवं सेवा कार्य	बी.ए.बी.एड. द्वितीय वर्ष एव बी.एड. प्रथम वर्ष में सफाई, श्रमदान, रक्तदान, साक्षरता, वृक्षारोपण, पॉलिथीन विरूद्ध रैली, जलकुम्भी निवारण अभियान, चिकित्सा सहायता आदि कार्यक्रम करवाना।
13.	प्रशिक्षण कार्यक्रम (Internship Programme)	16 सप्ताह कार्यक्रम– बी.एड. द्वितीय वर्ष एवं बी.ए.बी.एड. चतुर्थ वर्ष के अन्तर्गत विद्यालयों में जाकर शिक्षण के साथ–साथ विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों की जानकारी लेना, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, खेलकूद कार्यक्रम तथा भित्ति पत्रिका (वॉल मैग्जिन) तैयार करना एवं सम्पूर्ण गतिविधियों की फाईल तैयार करना।

		4 सप्ताह प्रशिक्षण कार्यक्रम – बी.एड. प्रथम वर्ष एवं बी.ए.बी.एड. तृतीय वर्ष के अन्तर्गत विद्यालयों में जाकर शिक्षण के साथ–साथ विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों की जानकारी लेना।
14.	Art and Craft Work Shop	बी.ए.बी.एड. द्वितीय एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में 7 Days S.U.P.W. Camp

बाह्य मूल्यांकन–

1. बी.ए.बी.एड. तृतीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष में शिक्षणाभ्यास में लिये गये दोनों शिक्षण शास्त्र विषयों में से किसी एक पर प्रायोगिक पाठ देना होगा, जिन्हें बाह्य परीक्षकों द्वारा जांचा जायेगा, उक्त कार्य मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार होगा। जिसमें मूल्यांकन अंक 100 निर्धारित है।
2. बी.ए.बी.एड. चतुर्थ वर्ष एवं बी.एड. द्वितीय वर्ष में विद्यालय इन्टर्नशिप के पश्चात् बाह्य परिक्षको के द्वारा VIVA-VOICE होगा जो कि 100 अंको का निर्धारित हैं।

(7) महाविद्यालय में उपलब्धियाँ:–

महाविद्यालय के परीक्षा परिणाम – 2008–2017

संकाय	नाम	प्रतिशत व प्राप्तांक		
		सैद्धान्तिक 600	प्रायोगिक 300	कुल 900
सत्र 2008–2009				
कला	पूनम सनाढ्य	398	243	641 (71.22)
वणिज्य	कपिल कुमार बाहेती	395	243	643 (71.44)
विज्ञान	वनिता चैचाणी	433	234	669 (74.33)
सत्र 2009–2010				
कला	साबीर अली सैयद	393	207	600 (66.67)
वणिज्य	डिम्पल कुमावत	424	240	664 (73.78)
विज्ञान	मनीषा समदानी	471	272	743 (82.55)
सत्र 2010–2011				
क्ला	रेखा त्रिवेदी	452	260	712 (79.1)
वणिज्य	सुनिता कुमावत	423	260	683 (75.9)
	सोनल जैन	413	270	683 (75.9)
विज्ञान	निलम राव	434	270	704 (78.2)
सत्र 2011–2012				
कला	खूश्बु लोधा	457	277	734 (81.55)
वाणिज्य	प्रमीला कुमावत	424	278	681 (75.67)
विज्ञान	सोनिका डाड	471	280	732 (81.33)
सत्र 2012–2013				
कला	कंचन कुमावत	425	267	692 (76.88)
वाणिज्य	नुतन साँवरिया	433	278	711 (79.00)
विज्ञान	रीना दमामी	445	286	731 (81.22)
सत्र 2013–2014				
कला	माधवी जोशी	442	284	726 (80.67)
वाणिज्य	पालीवाल दिनेश	417	284	701 (77.89)
विज्ञान	भाविका महेश्वरी	444	274	718 (79.78)
सत्र 2014–2015				
कला	भारती साहु	442	284	726 (80.67)
वाणिज्य	हेमन्त भट्ट	436	285	721 (80.11)
विज्ञान	अनिल सोनी	475	252	727 (80.75)
सत्र 2015–2017				
कला	काजल दवे	396	292	682 (85.25)
वाणिज्य	अमित सनाढय	380	288	668 (83.25)
विज्ञान	शुभम सोनी	380	292	672 (84.00)
सत्र 2016–2018				

कला	राजकुमारी कुमावत	401	380	781 (86.78)
वाणिज्य	भरत बागोरा	362	360	722 (80.22)
विज्ञान	नन्दनी गुर्जर	378	390	768 (85.33)
		सत्र 2017–2019		
कला	प्रकाश सिंह राजपुत	395	379	774 (86.00)
वाणिज्य	अनिता जोशी	409	380	789 (87.67)
विज्ञान	करिश्मा पालीवाल	387	384	771 (85.66)
		सत्र 2018–2020		
कला	रेणुका दवे	394	391	785 (87.62)
वाणिज्य	ऐकता यादव	369	382	751 (83.44)
विज्ञान	काजल कुमावत	412	396	808 (89.78)
		सत्र 2019–2021		
कला	जशोदा रेगर	397	395	789 (87.67)
वाणिज्य	कुणाल सनाढ्य	402	390	792 (88.00)
विज्ञान	गार्गी व्यास	431	392	823 (91.44)
		सत्र 2020–2022		
कला	सुहानी गुर्जर	413	377	790 (87.78)
वाणिज्य	कोमल भाटीया	398	394	792 (88.00)
विज्ञान	युक्ता पालीवाल	425	396	821 (91.22)
		सत्र 2021–2023		
कला	पुजा धावड	378	392	770 (85.56)
वाणिज्य	नीता चौधरी	365	389	754 (83.78)
विज्ञान	यशवंत पुरोहित	392	376	768 (84.78)
		सत्र 2022–2024 (बी.एड. प्रथम वर्ष)		
कला	झलक व्यास	652	291	943 (85.78)
वाणिज्य	निकिता पुरोहित	673	274	947 (86.09)
विज्ञान	मानस शर्मा	674	291	965 (87.73)

- सत्र 2008–2016 में महाविद्यालय की सामुदायिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सहभागिता को देखते हुए जिला उपखण्ड प्रशासन द्वारा नियमित रूप से निदेशक श्री विपुल कौशिक एवं महाविद्यालय के समर्पित कायकर्ताओं को सम्मानित किया गया।
- सघन ब्लॉक अभ्याय शिक्षण (वॉल मैग्जिन का निर्माण)

समूह–1	होली	केरियर डे
समूह–2	ग्लोबल वार्मिंग	मदर डे
समूह–3	आतंकवाद	टीचर डे
समूह–4	कन्या भ्रुण हत्या	विज्ञान दिवस
समूह–5	व्यसन अभिषाप	पर्यावरण दिवस

- 8 मार्च को विश्व महिला दिवस पर नगर में महिला उत्थान जागृति रेली व प्रतिवर्ष इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को करने वाली महिलाओं को सम्मान।
- विश्वविद्यालय स्तर पर वरीयता सूची में स्थान लाने पर महाविद्यालय के छात्र/छात्राध्यापिकाओं को नगर स्तर पर गौरव सम्मान दिया गया।
- प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों ने आकर्षक वॉल मैग्जिन एवं फाइलें तैयार की।

साहित्यिक सांस्कृतिक एवं खेल पखवाड़ा (15 फरवरी से 25 फरवरी):–

इसके अन्तर्गत साहित्यिक, सांस्कृतिक, वाद–विवाद, खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें 40 विजेता, उपविजेता एवं प्रशिक्षणार्थियों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किये गये।

(8) अर्न्तसोसायटी एवं नगरीय वाद–विवाद प्रतियोगिता:–

1. महाविद्यालय स्तर की पांच सोसायटी के मध्य "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक का स्वरूप कैसा हो" विषय पर प्रतियोगिता "रजत जयन्ती" सभागार में आयोजित की गई जिसमें शिवाजी सोसायटी ने प्रथम सीन प्राप्त किया।
2. मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा द्वारा आयोजित वाद–विवाद एवं चित्रकला संगीत प्रतियोगिता में भी महाविद्यालय के छात्राध्यापकों ने अपना स्थान बनाया।

(9) महाविद्यालय की गतिविधियाँ:–

1. साहित्यिक गतिविधियाँ
2. सांस्कृतिक गतिविधियाँ

द अंकुर महाविद्यालय द्वारा आयोजित अर्न्तसोसायटी सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'HARMONY-2017' के नाम से सम्पन्न कराई गई, जिसके अर्न्तगत अनेक प्रतियोगिताएं सम्पन्न कराई गई।

- गेट–टुगेदर।
- डांडिया रास।
- दीपोत्सव।
- फागोत्सव।
- शैक्षणिक यात्रा।
- सांस्कृतिक सप्ताह।
- फागोत्सव।
- कला एवं संस्कृति सप्ताह।
- S.U.P.W. Camp।
- विदाई सामारोह एवं वार्षिकोत्सव।

(10) खेलकूद प्रतियोगिता:–

अर्न्तसोसायटी खेलकूद प्रतियोगिता चार सोसायटी के मध्य सम्पन्न कराई गई। इस प्रकार सभी प्रतियोगिताओं में छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं ने अपना–अपना न प्राप्त किया। विजेता विद्यार्थीयों को श्री हरीश कौशिक, श्रीमती वेणु कौशिक, श्री विपुल कौशिक, श्रीमती कीरण कौशिक एवं माननीय चेयरमेन साहब (नगरपालिका, नाथद्वारा) एवं डॉ. प्रदीप पानेरी द्वारा पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये।

(11) अर्न्त–महाविद्यालय प्रतियोगिता:–

विभिन्न महाविद्यालयों के बीच आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में द अंकुर बी. एड. महाविद्यालय की छात्राध्यापक पिन्स एवं छात्राध्यापिका तरूणा शर्मा ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विभिन्न महाविद्यालयों में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनारों में महाविद्यालय से प्राध्यापिका डॉ. लोक कल्याणी लावटी, डॉ. रंजना शर्मा, श्रीमती किरण व्यास, श्री तुलसीराम व्यास एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी त्रिपाठी ने भाग लिया।

महिला दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

महिला मानव जाति के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति हे। मात के अभिप्रेण से ही इच्छा शक्ति को सकारात्मक दिशा प्राप्त होती है। माता को एक शब्द संग्रह अथवा स्मृति न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिये।

इतिहास से लगाकर वर्तमान भूमंडलीकरण वैश्वीकरण के दौर में असुरक्षित मातृशक्ति को स्वयं के स्वाभिमान से उठकर कार्य करना होगा क्योंकि माता जीवन के संस्कार को नई दिशा देती है और उससे ही दशा सुधरती है। उक्त विचार शिक्षाविद् अल्पना सिंह (मोहनलाल सुखाडिया विश्व विद्यालय, उदयपुर) ने 'महिला की चुनौतियां वर्तमान परिप्रेक्ष्य में' विषयक आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता यह बात कही।

द अंकुर एजुकेशनल सोसायटी की उपाध्यक्षा श्रीमती वेणु कौशिक ने महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से आगे आने हेतु प्ररित किया। जीवन में शिक्षा से ही महिलाओं का अस्तित्व रहेगा। इस हेतु संस्थान द्वारा महिलाओं के हितों की रक्षा हेतु किये जा रहे प्रयासों से अवगत कराया।

द अंकुर एजुकेशनल सोसायटी मानद निदेशक श्रीमती किरण कौशिक ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में NCF 2005, 2009 एवं युनिसेफ, पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा आयोजित कई कार्यक्रमों में महिलाओं की सहभागिता पर प्रकाश डाला।

द अंकुर बी. एड. कॉलेज के प्राध्यापक तुलसीराम व्यास, सुनिता श्रीमाली आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापिका विजय लक्ष्मी त्रिपाठी ने किया।

(12) सत्र 2023–24 के दौरान सांस्कृतिक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्राध्यापक–छात्राध्यापिकाः–

क्र.स.	प्रतियोगिता का नाम	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान
1.	एकल गीत प्रतियोगिता	रितीका आशीया	प्रियांशी पालीवाल
2.	कविता पाठ प्रतियोगिता	आरती	विष्णु गुर्जर
3.	मेहन्दी प्रतियोगिता	प्रियंका कुंवर	मेघा सोनी
4.	रंगोली प्रतियोगिता	झलक व्यास	पुनम जाट
5.	एकल नृत्य प्रतियोगिता	निकिता सुथार	निकिता चौहान
6.	समूह नृत्य प्रतियोगिता	आयुष एण्ड ग्रुप	महक एण्ड ग्रुप
7.	नाटक प्रतियोगिता	भगवती एण्ड ग्रुप	महिमा एण्ड ग्रुप
8.	Best Fashion Parade	गुड्डु सिंह एवं किरण जोशी	विनोद कुमावत एवं आस्था औदिच्य

(13) उन्मुक्त गगन शिविरः–

पहला दिन 19.12.2023

1. स्कूल से रवाना 7.30 बजे, आशापुरा माता जी 11.00 बजे
2. ओम बन्ना
3. ओम बन्ना से रवाना
4. जैसलमेर पहुचेंगे

दुसरा दिन 20.12.2023

1. जैसलमेर भ्रमण
2. वार म्यूजियम
3. रात्रि कार्यक्रम

तीसरा दिन 21.12.2023

1. जैसलमेर भ्रमण, गढिसर झील
2. कुलधरा
3. सम जीप सफारी, केमल सफारी
4. सम रात्रि कार्यक्रम
5. जैसलमेर होटल प्रस्थान

चौथा दिन 22.12.20223

1. जैसलमेर से रवाना तनोटराय माता
2. तनोट माता से रवाना
3. लोंगेवाला
4. लोंगेवाला से रवानगी
5. रामदेवरा

पांचवा दिन 23.12.2023

1. रामदेवरा दर्शन
2. रामदेवरा से रवाना

(14) पूर्व विद्यार्थी परिषद:-

विद्यार्थी किसी संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति का माध्यम होता है। वह संस्था का आईना होता है और उसी से संस्था की पहचान होती है। पूर्व–विद्यार्थी परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष में दो बार 'मिलन समारोह' होता है, जिससे वर्तमान समय तक के विद्यार्थीयों का मिलना होता है और शिक्षक माहौल में कौन, कहाँ, किस पद पर कार्यरत है, उसकी भूमिका को आपस में बाँटा जाता है। इस परिषद् को सुचारु रूप से चलाने के लिए परिषद् की कार्यकारिणी का गठन किया गया है। वर्तमान में इस परिषद् के कुल 700 सदस्य पंजीकृत है।

-:कार्यकारिणी:-

अध्यक्ष	–	मानस शर्मा
उपाध्यक्ष	–	खुश्बु राजगुरु
सांस्कृतिक सचिव	–	किरण जोशी
वित्त मंत्री	–	विनोद कुमावत
साहित्यिक सचिव	–	प्रियांशी पालीवाल
खेल मंत्री	–	पुरीलाल
महा सचिव	–	ठाकुर खत्री
सचिव	–	निकिता सुथार
सह सचिव	–	अरविंद लोहार

(15) अन्य उपलब्धियाँ:-

स्थानीय महाविद्यालय में विद्यार्थी कल्याण परिषद् तथा प्लेसमेन्ट सेल सीापित किया गया है, जिसके तहत् विद्यार्थीयों को नियुक्ति सम्बन्धी सहायता दी जाती है।

महिला प्रकोष्ठ की स्थापना के अन्तर्गत महिला उत्पीड़न, अनुसूचित जाति, जनजाति, विकलांग, विधवा, परित्यका उत्थान जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये जाते रहें।

(16) प्रवेश के नियमः–

1. आवेदन–पत्र शुल्क 500/– रूपया जमा कराकर प्राप्त करना होगा।
2. प्रवेश पत्र की पूर्ति से पहले विवरणिका को ध्यानपूर्वक शुरू से अन्त तक अवश्य पढ़ लेवें।
3. प्रवेश के समय आवेदन–पत्र में दर्शायें सभी निम्न प्रमाण–पत्रों की 2–2 सत्य–प्रतिलिपियाँ एवं मूल दस्तावेज साथ लावें, ताकि मिलान करने पर प्रवेश लिया जा सकें–
    - सैकण्डरी व हायर सैकण्डरी अंकतालिका एवं स्थानान्तरण पत्र।
    - स्नातक की अंकतालिका (सभी वर्षों की) एवं डीग्री।
    - मेहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों से आने वाले प्रतिभागियों के लिए माईग्रेशन प्रमाणपत्र।
    - प्रमाण पत्र – अ.जा., अ.पि.व., ज.जा., बी.पी.एल, विधवा प्रमाणपत्र, परित्यक्ता प्रमाणपत्र आदि।
    - पी.टी.ई.टी प्रवेश पत्र अंकतालिका व कॉलेज एलोटमेंट लेटर की फोटोप्रति।
    - विवाह पंजीयन प्रमाण पत्र।
4. दो लिफाफे (पांच रूपये का टिकिट लगा हो), दो पोस्टकार्ड जिस पर अपना स्थायी पता अंकित हो।
5. प्रवेशार्थी को 100/–रू. का शपथ पत्र प्रस्तुत करना होगा जो नाटरी पब्लिक द्वारा प्रमाणित होगा, जिसमें वह उल्लेख करेगा कि उसके द्वारा दी गई सम्पूर्ण जानकारी सही है, यदि कोई जानकारी गलत पाई जाती है और प्रवेश निरस्त हो जाता है, तो उसका जिम्मेदार प्रार्थी स्वयं होगा।
6. प्रत्येक छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं को महाविद्यालय गणवेश में आना होगा।
7. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को महाविद्यालय की और से एक परिचय पत्र दिया जायेगा, जिसे प्रशिक्षणार्थी धारण कर रखेगा, विद्यालय के अभ्यास पाठ देते समय भी शाला गणवेश व परिचय पत्र पहन कर जाना अनिवार्य है।
8. पी.टी.ई.टी, एन.सी.टी.ई. एवं मोहनलाल सुखाड़िया के नियमानुसार अध्यापन विषय वही दिये जायेंगे जो बी.ए./बी. कॉम./बी.एस.सी. में होंगे एवं जिनका अध्ययन लगातार 2 वर्ष किया हो। दोनों विषय नहीं होने की स्थिति में एक विषय कॉलेज द्वारा आवंटित किया जायेगा जिसका शिक्षण महाविद्यालय में अध्ययन उपलब्ध होगा।
9. सेवारत अभ्यर्थी का पी.टी.ई.टी द्वारा चयन होकर लेने सम्बन्धित नियोजक विभाग से कार्यमुक्ति आदेश प्राप्त कर महाविद्यालय में प्रस्तुत करना आवश्यक होगा, अन्यथा प्रवेश की स्वीकृति नहीं दी जायेगी।
10. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी की 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है, अन्यथा परीक्षा से वंचित होने पर प्रशिक्षणार्थी स्वयं जिम्मेदार होगा।
11. यदि प्रशिक्षणाथी किसी कारणवश अवकाश पर रहता है तो प्रचार्य से पूर्व में अनुमति लेकर महाविद्यालय छोड़ेगा।
12. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को महाविद्यालय की गतिविधियों में सम्पूर्ण अवधि तक अनिवार्य रूप से अनुपस्थिति देनी होगी, यदि प्रशिक्षणार्थी किसी प्रकार की अनियमितता अथवा महाविद्यालय के नियमों का उल्लंघन करता है तो प्राचार्य उसे महाविद्यालय से निष्कासित कर सकेगा।
13. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी महाविद्यालय के नियमों तथा समय–समय पर जारी आदेश–निर्देश की पालना करने के लिये बाध्य होगा तथा महाविद्यालय के अन्तरिम हितों की दृष्टि से आवश्यकता पड़ने पर प्रशासन के पास नियमों संशोधन व नये नियम बनाने का अधिकार होगा।
14. महाविद्यालय के किसी भी प्राध्यापक, मंत्रालयिक कर्मचारी, प्रशिक्षणार्थी के साथ अभद्र व्यवहार करने पर नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।
15. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को सत्रीय कार्य, दैनिक अभ्यास पाठ पुस्तिका, सूक्ष्म शिक्षण पाठ, अवलोकन डायरी, पुस्तक समीक्षा, मनावैज्ञानिक परीक्षण, क्रियात्मक अनुसंधान आदि पूर्ण करने होंगे।
16. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को सामयिक जांच व मिड टेस्ट देनें होंगे अन्यथा मूल्यांकन के सत्रांक भेजे जाना संभव नहीं होगा।

(17) पुस्तकालय के नियमः–

1. पुस्तकालय में प्रवेश हेतु प्रत्येक सदस्य का पंजीकरण होना आवश्यक है।
2. पुस्तकालय में प्रवेश से पूर्व उपयोगकर्ता को अपनी निजी सामग्री जैसे पुस्तकें, बैग, छाते आदि बाहर रखना होगा।
3. प्रत्येक पंजीकृत सदस्य को एक समय में दो पुस्तकें पुस्तकालय से आदान पर लेने का अधिकार होगा।
4. प्रत्येक पंजीकृत सदस्य को एक सदस्यता पत्रक और एक पाठ पत्रक (रीडर कार्ड) प्रदान किये जावेंगे, जिसे सदस्य को सदैव साथ में रखना होगा तथा कभी भी मांगने पर सदस्य को सदस्यता पत्रक दिखाना होगा।
5. उपरोक्त दोनों प्रकार के पत्रक जारी होने की दिनांक से शैक्षिक अवधि तक वैध रहेंगे।
6. पुस्तकालय प्रतिदिन केवल घोषित अवकाशों को छोड़कर खुला रहेगा।
7. पुस्तकों का आदान–प्रदान पुस्तकालय बन्द होने से आधा घंटा पूर्व स्थगित हो जायेगा।
8. दोनों प्रकार के पत्रक अहस्तांतरणीय है, और केवल उन्हीं के उपयोग के लिए है, जिनको प्रदान कियेग है। अन्य व्यक्ति द्वारा उन पत्रकों का उपयोग दुरूपयोग माना जायेगा।
9. प्रत्येक ग्रहिता पत्रक पर केवल एक पुस्तक 1 सप्ताह के लिए आदान कर दी जायेगी। पुस्तक वापस करने पर ग्रहिता पत्रक सदस्य को वापिस कर दिया जायेगा।
10. निश्चित् अवधि के पश्चात् पुस्तक वापिस नहीं करने पर 1 रूपया प्रतिदिन के हिसाब से कालातीत शुल्क देय होगा।
11. सदस्यों को ग्रहिता पत्रक सुरक्षापूर्वक रखनें चाहिए। गुम हुए पत्रकों का दूरूपयोग का पूर्ण उत्तरदायित्व सदस्य पर होगा।
12. यदि कोई ग्रहित पत्रक गुम हो जाये तो इसकी सूचना तुरन्त पुस्तकालय में लिखित रू॰ से देनी चाहिए। इस सूचना प्राप्ति के पश्चात् सदस्य को अनुलिपर ग्रहिता पत्रक प्रदान किया जाएगा, जिसके लिए एक निश्चित राशि तथा क्षतिपूर्ति बन्ध भरकर देना होगा।
13. दो बार से अधिक कोई पुस्तक पुनः निर्ममित नहीं की जाएगी।
14. सन्दर्भ पुस्तक, पाण्डुलिपियां, दुर्लभ पुस्तक और आवधिक प्रकाशन निगमित नहीं किये जाऐंगे, इनका उपयोग पुस्तकालय में ही किया जा सकेगा।
15. अपने नाम पुस्तक निर्गमित कराने से पूर्व सदस्य द्वारा पुस्तक की भली–भांति जांच कर लेनी चाहिए और किसी प्रकार की क्षति होने पर सहायक को सूचित कर देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो सदस्य को ही उसका उत्तरदायी माना जाएगा और सदस्य को उसका दुगुना मूल्य अथवा नवीन प्रति भरनी पड़ेगी।
16. यदि किसी सदस्य द्वारा कोई पुस्तक गुमा दी जाती है अथवा क्षतिग्रस्त कर दी जाती है तो उसे पुस्तक के मूल्य की दुगुनी राशि अथवा नयी प्रति देनी पड़ेगी।
17. अपने पते में किसी प्रकार के परिवर्तन की सूचना सदस्यगणों को तत्काल पुस्तकालय में देनी चाहिए।
18. पुस्तकालय समिति विशिष्ट परिस्थितियों में बिना कोई कारण बताये किसी भी सदस्यता आवेदनपत्र को अस्वीकार कर सकती है तथा किसी व्यक्ति के पुस्तकालय प्रवेश अथवा पाठ्य सामग्री के उपयोग करने पर रोक लगा सकती है।
19. पुस्तकालय विशिष्ट परिस्थितियों में किसी सदस्य को किसी विशिष्ट पुस्तक का आदान स्वीकृत अथवा अस्वीकृत कर सकता है।
20. जो पुस्तकें महाविद्यालय से जारी की जायेगी, उसमें किसी भी प्रकार से पेन, पैन्सिल से लिखना, पेज फाड़ना, गन्दा करने पर सुरक्षित राशि मेंसे काटी जावेगी।

(18) बुक बैंकः–

महाविद्यालय में विगत वर्षों ये बुक बैंक योजना प्रारम्भ की गई है। पिछले वर्षों में इस योजना से 60 छात्र प्रतिवर्ष लाभान्वित किये जा रहें हैं। यह सुविधा निम्न विद्यार्थीयों के लिए है जो–

- अनुसूचित जाति/जनजाति के हो व पढ़ने में रूचि रखते हो।
- शारीरिक रूप से विकलांग हो।
- आर्थिक रूप से कमजोर हो।
- ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने विश्वविद्यालयी परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये हों या विशेष योग्यता व प्रतिभा सम्पन्न हो अथवा जिसके गत परिक्षा का पूर्ण योग 55 प्रतिशत अथवा अधिक हो।

उपर्युक्त वर्ग के अन्तर्गत आने वाले छात्र बुक–बैंक प्रार्थनापत्र सूचना प्रसारित होने पर पुस्तकालय से प्राप्त कर सकते हैं।

बुक बैंक योजना सम्बन्धित नियमः–

1. बुक बैंक योजना के अन्तर्गत वर्ष भर के लिए पुस्तकें आवंटित की जा सकेगी। छात्र का यह नैतिक दायित्व है कि पुस्तकालय के आवंटित पुस्तकें लौटा देवें, अन्यथा 25 पैसे प्रतिदिन के हिसाइ से विलम्ब शुल्क देना होगा।
2. यदि कोई विद्यार्थी पुस्तक परिवर्तन करना चाहे तो वह तीन माह मे एक बार करा सकेगा।
3. बुक बैंक के जितने आवेदन प्राप्त होंगे, उनका मुल्यांकन कमेटी द्वारा किया जायेगा और छात्रों को साक्षात्कार के लिए भी बुलाया जा सकेगा। साक्षात्कार के लिए छात्र की उपस्थिति अनिवार्य होगी।
4. जो विद्यार्थी इस योजना के अन्तर्गत आवेदन करेंगे, उन्हें सही तथ्य ही भरने होंगे, असत्य तथ्य दिये जाने पर उनके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही कर दण्डित किया जा सकेगा।
5. पुस्तकालय से प्राप्त पुस्तकों पर कोई विद्यार्थी अपना नाम इत्यादि कुछ नहीं लिखेगा। पुस्तकों पर किसी भी प्रकार की अण्डरलाईन या मार्जिन पर कुछ भी पाया जाने पर दण्डित किया जा सकेगा।
6. अगर कोई छात्र इस योजना के अन्तर्गत अनुपयुक्त पाया गया तो प्राचार्य को यह अधिकार होगा कि वा छात्र की सदस्यता समाप्त कर पुस्तकें लौटानें की कार्यवाही करें।
7. सत्र की समाप्ति पर सदस्यता शुल्क व रेन्टल चार्जेस छात्र को नहीं लौटाए जायेंगे। इस प्रकार प्राप्त शुल्क से बुक–बैंक योजना का विस्तार किया जाता है।

नोट– इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी सूचना पट्ट के जरिये सत्र के प्रारम्भ में दी जा सकेगी।

पुस्तकालय में छात्रों की सहायता एवं शंका के समाधान हेतु पुस्तकालय अधिष्ठाता होगा जिसे अपने कार्य हेतु महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा अधिकार प्रदत्त किये जायेंगे। छात्र अपनी कठिनाईयों के समाधान हेतु पुस्तकालय अधिष्ठाता से सम्पर्क अथवा उसे आवेदन देंगे जो अपने घोषित समय में इस कार्य हेतु छात्रों को पुस्तकालय में ही उपलब्ध होगा।

(19) आवश्यक निर्देशः–

1. सत्रीय कार्य को सूचना के 15 दिवस के अन्दर जमा करवाना जरूरी है।
2. सूक्ष्म शिक्षण एवं दैनिक अभ्यास शिक्षण पुस्तिका कार्य समाप्ति के 3 दिन के अन्दर आवश्यक रूप से जमा करवानी होगी।
3. सभी प्रकार की फाईलें सम्बन्धित प्राध्यापकों को नियत समय पर जमा करवानी आवश्यक है।
4. किसी भी प्रकार की सूचना मौखिक रूप से नहीं दी जाकर सूचना पट्ट पर लगा दी जावेगी, अतः सूचना पट्ट नियमित रूप से देखें व सूचनाओं की अनुपालना अनिवार्य से करें।
5. खाली समय में महाविद्यालय के बाहर व बरामदें में नहीं घूमें अपने–अपने कॉमन रूम में जाकर ही बैठेंगे।
6. लगातार 10 दिन तक अनुपस्थित रहने की स्थिति में प्रवेश का नवीनीकरण कराना होगा, जिसका निर्धारित शुल्क जमा करवाना होगा।
7. सूक्ष्म शिक्षण, दैनिक अभ्यास पाठ, सघन शिक्षण, उनमुक्त गगन शिविर के दौरान सामान्यतः किसी भी प्रकार का अवकाश स्वीकृत नहीं किया जायेगा।

8. किसी भी कारणवश प्रशिक्षणार्थी के निर्धारित संख्या में अभ्यास पाठ पूर्ण नहीं होने और पर्यवेक्षित नहीं होंगे तो विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रायोगिक परीक्षा में भाग नहीं ले सकेगा।

(20) छात्रवृत्तिः–

अनुसूचित जाति, जनजाति, विकलांग, बी.पी.एल. परिवार एवं अन्य पिछड़ा वर्ग (बी.पी.एल.) के प्रशिक्षणार्थियों कों समाज कल्याण विभाग द्वारा निर्धारित आवेदन पत्र में ही छात्रवृत्ति आवेदन–पत्र पूर्ति कर 15 दिन के भीतर सभी आवश्यक प्रपत्रों के साथ महाविद्यालय कार्यलय में जमा कराना होगा। आय प्रमाण पत्रक को 100/– रू के स्टाम्प पर शपथ–पत्र में नोटरी पब्लिक द्वारा प्रमाणित कराकर जमा कराना होगा। इनके अभाव में प्रशिक्षणार्थी यदि छात्रवृत्ति से वंचित रह जाता है, जो उसका वो स्वयं जिम्मेदार होगा।

(21) सरस्वती वंदना, गुरु वंदना एवं राष्ट्रीय गानः–

–ःराष्ट्रीय गानः–

	–भावार्थ–
जन–गण–मन अधिनायक जय है, भारत–भाग्य–विधाता। पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा, द्रविड़–उत्कल बंग, विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग। तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष माँगें, गाहे तब जय–गाथा। जन–गण–मंगलदायक जय है, भारत–भाग्य विधाता। जय है, जय है, जय है, जय जय जय जय है।।	मैं अपनी मातृभूमि की वन्दना करता हूँ, जो निर्मल जल वाली है, फलोंयुक्त हैं, जहां मलयाचल पर्वतों से आने वाली ठण्डी हवाएं चलती हे, जो हरी–भरी है, ऐसी मातृभूमि की वन्दना करता हूँ, जिसकी उज्जवल चांदनी रात में भी प्रसन्नता का संचार करती है। जिसके वृक्ष खिले हुए पुष्पों से सुशोभित है। जो मधुर मुस्कान बिखेरती है, और मीठी वाणी बोलने वाली है, जो सभी सुख देने वाली है, ऐसी मातृभूमि की मैं वन्दना करता हूँ।

–ःगुरू वन्दनाः–

ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

अर्थ– मैं गुरू की मूर्ति का ध्यान करता हूं और गुरू के चरण कमलों की पूजा करता हूं क्योंकि गुरू के वाक्य और गुरू की कृपा से मोक्ष प्राप्त होता है।

गुरूः ब्रह्म, गुरूर्विष्णुः, गुरूर्देवों महेश्वरः।
गुरू साक्षत् पर ब्रह्मः, तस्मैं श्री गुरूवे नमः।।

अर्थ– गुरू ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर है। गुरू ही साक्षात् परब्रह्म है। ऐसे गुरू को मैं प्रणाम करता हूं।

–:शान्ति पाठः–

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माम् अमृतंगमय।।

अर्थ– हे प्रभु!' हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले चले।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद् दःखभाग–भवत्।।

अर्थ– हे प्रभु। विश्व में सभी प्राणी सुखी जीवन व्यतीत करें, सब के शरीर स्वस्थ हो, सब कल्याण के भागी हो एवं कोई भी प्राणी संसार में दुःखी न रहे।

–:गायत्री मंत्रः–

ऊँ भूभुर्वः स्वः तत्वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि,
धियों यो नः प्रचोदयात्।।

अर्थ– सत् चित आनन्द स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ, तेजस्वी और पाप–नाशक परमात्मा को अपनी अन्तर आत्मा से धारण करते है, जो हमारी बुद्धि को सदमार्ग की और प्रेरित करें।

–:मंगल प्रार्थनाः–

भुमि मंगल, गगन मंगल, वायु मंगल,
जीव मंगल, अगन मंगल, नीर मंगल,
सूर्य मंगल, चन्द्र मंगल, देव मंगल,
मनुज मंगल, सर्व मंगल, भवतु भवतु भवतु,
सर्व मंगल, भवतु भवतु भवतु।।

–:प्रार्थनाः–

❖ तेरी पनाह में.....

तेरी पनाह में हमें रखना, सीखे हम नेक राह पर चलना, तेरी पनाह में.....
1. कपट कर्म चोरी बेईमानी और अहिंसा से हमको बचाना, कपट धर्म.....
नली का बन जाऊं ना पानी, निर्मल गंगा जल बनाना–2, हो हो....
अपनी निगाह में हमें रखना, सीखे हम नेक राह चलना
2. क्षमादान कोई तुझसा नहीं और मुझसा नहीं कोई अपराधी–2
पुण्य की नगरी में भी मैंने पापों की गठरी ही बांधी–2 हो हो.....
करूणा की छाव में हमें रखना, सीखें हम नेक राह पर चलना, तेरी पनाह में.....

❖ इतनी शक्ति हमें देना दाता.....

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।। इतनी शक्ति.....
दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे,
हर बुराई से बचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे।
वैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।। इतनी शक्ति.....
हम ना सोचे हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण,
फूल खुशियों के बांटे सभी कों, सबका जीवन ही बन जायें मधुवन।
अपनी करूणा का जल तू बहा के, करदें पावन हम मन का कोना।। इतनी शक्ति.....
हर तरफ जुल्म की बेबसी है, सहमा सहमा सा हर आदमी है,
पाप का बोझ बढ़ता ही जाये, जाने कैसे ये धरती थमी है।
बोझ ममता का तू जो उठाले, तेरी रचना का कहीं अन्त होना।। इतनी शक्ति.....

❖ हे शारदे माँ.....

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ!
अज्ञानता से हमें तार दे माँ!
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे, हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे।
हम है अकेले हम हैं अधूरे, तेरी शरण में हमें प्यार दे माँ।।
हे शारदे माँ.....
मुनियों ने समझी, है ऋषियों ने जानी, वेदों की भाषा पुराणों की वाणी।
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने, विद्या का हमकों अधिकारी दे माँ।।
हे शारदे माँ.....
तू श्वेत वरणी कमल पर बिराजे, हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे।
मन से हमारे मिटा दे अंधेरा, हमकों उजालों का संसार दे माँ।।
हे शारदे माँ.....

❖ ईश वन्दना– प्रभु मेरे परमात्मा, तेरे दर्शन को तरसे आत्मा

काम क्रोध ने उलझाया, राग द्वेष से हे फरमाया।
शक्ति दों करू साधना, तेरे दर्शन को तरसे आत्मा....(2)
प्रभु मेरे परमात्मा.....
राह दिखा दो यहाँ अंधयारा, सुझता नहीं है कोई किनारा,
भक्ति दो करू साधना, तेरे दर्शन को तरसे आत्मा....(2)
प्रभु मेरे परमात्मा.....
दया धर्म को मुझको वर दो, विद्या से मेरी झोली भर दो,
दुःखों का कर दो खात्मा, तेरे दर्शन को तरसे आत्मा....(2)
प्रभु मेरे परमात्मा.....
तु ही मेरा भाग्य विधाता, हर पल मेरा साथ निभाता,
सर्वव्याप्त तेरी आत्मा, मेरे दर्शन को तरसे आत्मा....(2)
प्रभु मेरे परमात्मा.....

:गीत:

❖ हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है,
रंग रूप देश भाषा चाहे अनेक है।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा चमेली,
प्यारे–प्यारे फूल गूँथे, माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहें की टेर प्यारी,
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र, कृष्णा कावेरी
जा के मिल गई सागर में, हुई सब एक है।
धर्म है अनेक जिनका, सार वही हैं
पंथ है निराले, सबकी मंजिल तो एक है।।

❖ नीला घोड़ा रो असवार

नीला घोड़ा रा असवार, म्हारा मेवाड़ी सरदार।
राणा सुणता ही जाजोजी।
राणा थारी दकाल सुण–सुण, अकबर धूज्यो जाय।
हल्दी घाटी रंगी खून स्यूं, नालों बहतो जाय।
चाली मेवाड़ी तलवार, बहग्या खूना रा खेंगाल।।
राण सुणता.....
झालो गयो सुरगां माही, पातल लोह लवाय,
चेतक तन स्यूं बहे कि नालो, करतब बरण्यो न जाय,
म्हाने जीवन स्यूं नहीं प्यार, म्हाने मरणो एकण बार।।
राणा सुणता.....
शक्ति सिंह री गर्दन झुक गयी, पड्यो पगां मे आय।
प्यार झूम ग्यो, गले लूमग्यों, वचन न मूंडे आय।
दोन्यूं आसूंडा ढलकाय, वांरी कुण छुड़वाय।।
राणा सुणता.....

❖ किसी के काम जाम आए

किसी के काम जो आए, उसे इंसान कहते है।
पराया दर्द अपनाएं, उसे इंसान कहते है।
कही धनवान है कितना, कही इंसान निर्धन है।
कभी दुख है कभी सुख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल से न घबराए, उसे इंसान कहते है।
पराया.....
ये दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा, कही ठोकर।
कोई हँस–हँस के जीता है, कोई जीता रो–रोकर।
जो गिरकर फिर संभल जाए, उसे इंसान कहते है।
पराया.....
अगर गलती रूलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, जो अक्सर हो ही जाता है।
जो करले ठीक गलती को, उसे इंसान कहते है।
पराया.....
यों भरने को तो दुनिया मे पशु भी पेट भी भरते हैं।
लिए इन्सान का दिल जो, वे परमार्थ करते हैं।

मनुज जो बाँटकर खाए, उसे इंसान कहते है।
पराया.....
किसी के काम जाम आए, उसे इंसान कहते है।
पराया दर्द अपनाया, उसे इसांन कहते है।

❖ चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है,
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है।
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौनी गाय जहाँ माँ प्यारी है।।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।।1।।
जहाँ कर्म से भाग्य बदलता, श्रम निष्ठा कल्याणी हैं,
त्याग और तप की गाथाएं, गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान जहां का गंगाजल सा, निर्मल है, अविराम है।।2।।
इसके सैनिक समरभूमि में गाया करते हैं,
जहाँ खेत मे हल के नीचे, खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श जहाँ पर, परमेश्वर का धाम है ।।3।।

❖ सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले है इसकी, ये गुलिस्ता हमारा।।
पर्वत वो सबसे ऊंचा हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासवाँ हमारा।।
गोदी मे खेलती है, जिसकी हजारों नदियाँ,
गुलशन हैं, जिसके दम से, रष्के जिना हमारा।।
मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी है हम, वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।।

❖ धरती धोरां री

आ तो सुरगा ने शरमावें, ईण पर देव रमण ने आवें,
ईण रो जस नर नारी गावें, धरती धोरां री.....
सूरज कण–कण ने चमकावें, चन्दों इमरत रस बरसावें,
तारा निछरावल कर आवें, धरती धोरां री.....
लुण–लुण बाजरिया लहरावें, मक्की झालों देय बुलावै,
कुदरत दोनू हाथ लुटावैं, धरती धोरां री.....
पंछी मंगरा–मंगरा बोले, मिसरी मीठे सुर में घोलें,
झीणों बायरियों पंपोले, धरती धोरां री.....
ईण रो चित्तोड़गढ़ लूणें, ओ रो रणवीरों रो खूंटो,
ईण रो जोधाओं नव कूँटो, धरती धोरां री.....
आबू आवै रे परवाणे, लूणी गंगाजी ही जाणें,
उभो जैसलमेर सिवाणे, धरती धोरां री.....
ईण रो बीकाणे गर्वीलों, ईण रो अलवर जबर हठीलों,
ईण रो अजमेर भड़कीलों, धरती धोरां री.....